

शिक्षण प्रभावशीलता को सुधारने के लिए शिक्षण और सीखने की प्रक्रिया का समीक्षात्मक अध्ययन

डॉ. कंचन जैन, शिक्षाशास्त्र विभाग, सनराइज विश्वविद्यालय

शोध सार

शिक्षण और सीखने की प्रक्रिया को शिक्षकों से छात्रों तक ज्ञान के परिवर्तन की प्रक्रिया के रूप में परिभाषित किया जा सकता है। इस प्रक्रिया के भीतर विभिन्न तत्वों के संयोजन के रूप में संदर्भित किया जाता है जहाँ एक शिक्षक सीखने के उद्देश्यों की पहचान करता है और उन्हें स्थापित करता है और शिक्षण संसाधन विकसित करता है और शिक्षण और सीखने की रणनीति को लागू करता है। दूसरी ओर, सीखना एक प्रमुख कारक है जिसे छात्रों को पढ़ाते समय एक शिक्षक को ध्यान में रखना चाहिए। शोध के निष्कर्ष बताते हैं कि सकारात्मक और पर्याप्त रचनात्मक और विकासात्मक प्रतिक्रिया प्रदान करना, भूमिका निभाने की शुरुआत छात्रों के आत्मविश्वास और आत्म-सम्मान पर गहरा सकारात्मक प्रभाव डालती है। यह भी पता चला कि, सक्रिय शिक्षण वातावरण समावेशिता को बढ़ावा देता है और संकाय और छात्र के शैक्षणिक प्रदर्शन में सुधार करता है। शोध के निष्कर्ष शिक्षकों को शिक्षार्थी की अपेक्षा और शैक्षणिक प्रदर्शन को बेहतर बनाने के लिए एक समावेशी शिक्षण और सीखने के माहौल को बनाने और लागू करने में मदद करेंगे। शोध पत्र ने उच्च शिक्षा सेटिंग के भीतर शिक्षण प्रभावशीलता का आकलन करने के लिए विभिन्न शैक्षणिक पत्रिकाओं, शिक्षाशास्त्र और समावेशी प्रथाओं का मूल्यांकन किया। शोध का उद्देश्य उच्च शिक्षा में शिक्षण प्रभावशीलता का आकलन करना है। शोध में विश्वविद्यालय के अनुभवों से अभ्यास के सुदृढ़ीकरण के साथ सिद्धांत का विश्लेषण करने के लिए साहित्यिक रूपों का उपयोग करते हुए प्रयोगात्मक अनुसंधान विधियों का उपयोग किया गया।

मुख्य शब्द— प्रभावशीलता व्यावसायिक विकास शिक्षण, शिक्षण संसाधन, सीखना, सीखने का माहौल।

प्रस्तावना

शोध की शुरुआत विकास के मील के पत्थर को पूरा करने की इच्छा से की गई थी। रुचि का क्षेत्र शोधकर्ता के वर्तमान शैक्षणिक अभ्यास के लिए एक महत्वपूर्ण कारक था। विश्वविद्यालय के व्याख्याताओं के रूप में, हम यह देखने के लिए निरंतर संवाद में रहे हैं कि हम अपने दैनिक पाठ में निरंतर सुधार कैसे सुनिश्चित कर सकते हैं और इस प्रकार एक विशाल अध्ययन का एहसास हुआ जिसे समावेशी अभ्यास में किए जाने की आवश्यकता है। सीखने को एक ऐसे परिवर्तन के रूप में माना जा सकता है जो प्रकृति में स्थायी है क्योंकि शिक्षक द्वारा विशिष्ट कौशल विकसित करने, कुछ दृष्टिकोण बदलने या सीखने के माहौल के पीछे काम करने वाले विशिष्ट वैज्ञानिक कानून को समझने जैसी तकनीकों के माध्यम से छात्रों में परिवर्तन लाया जाता है। उच्च शिक्षा में हमारी वर्तमान भागीदारी के साथ, हम अक्सर 'समावेशी शिक्षा' शब्द का उपयोग करते हैं जो विकलांग बच्चों के लिए शिक्षा का पर्याय लगता है,, हमने अपनी उच्च शिक्षा में सीखने की बाधाओं को देखने की कोशिश की है और पाया है कि कई परिपक्व छात्रों को लगता है कि उनके पास सीखने की बाधाएँ हैं।

(सेक्वेरा, 2012) उच्च शिक्षा में एक सक्रिय शिक्षार्थी होने के लिए, प्रत्येक छात्र को एक वयस्क शिक्षार्थी के रूप में व्यवहार किए जाने की अपेक्षा होती है, जिसका प्रश्न पूछने और संदेहों को दूर करने के रूप में सीखने के माहौल पर कुछ अधिकार होता है ।

(माइकल, और मोडेल, 2003) छात्र सीखने के सत्र पर स्वामित्व की अपेक्षा करते हैं (मित्रा, 2008; पोंड और रेहान, 1997)। इसके अलावा, छात्र यह भी चाहते हैं कि उनका प्रशिक्षक सहयोगी और विनोदी हो, जो स्पष्ट रूप से पढ़ाए और आमतौर पर प्रासंगिक उदाहरणों का उपयोग करे ताकि पढ़ाई जा रही पाठ्यक्रम सामग्री को समझना आसान हो जाए, जो मुझे लगता है कि आज कक्षाओं में तेजी से आवश्यक हो रहा है ।

(बेकर एट अल., 1990) कई उच्च शिक्षा अनुसंधान ने पता लगाया कि शिक्षण और सीखने में समावेश और समानता के परिणामस्वरूप नीति निर्माता और विद्वान तृतीयक शिक्षा में

भागीदारी को व्यापक बनाने के महत्व पर चर्चा कर रहे हैं (उदाहरण के लिए, **ब्रैडली और मिलर, 2010**)। इसलिए, हमने हमेशा महसूस किया कि विभिन्न शैक्षणिक दृष्टिकोणों के माध्यम से समावेशी शिक्षण और सीखने को बढ़ावा देना पर्याप्त नहीं हो सकता है। पाठ्यक्रम और मूल्यांकन को डिजाइन करने में समावेशी शिक्षा सुनिश्चित करना आवश्यक है, ताकि यह सुनिश्चित किया जा सके कि हमारी शिक्षण और सीखने की प्रक्रिया हमारी शिक्षण प्रभावशीलता को बढ़ाए और सभी छात्रों को शामिल करने के लिए शिक्षा में बाधाओं को दूर करने के माध्यम के रूप में भी इसका उपयोग किया जा सके। शोध मुख्य रूप से शिक्षण और सीखने में प्रभावशीलता सुनिश्चित करने के लिए एक प्रक्रिया बनाने के लिए जिम्मेदार कारकों का विश्लेषण करने के लिए संबोधित किया गया है। इस अध्ययन का उद्देश्य प्रभावशीलता सुनिश्चित करने के लिए शिक्षण और सीखने की प्रक्रिया का विश्लेषण करना है।

शोध पद्धति

शोधकर्ताओं ने उच्च शिक्षा अभ्यास से व्यक्तिगत प्रतिबिंब का भी उपयोग किया। प्रतिबिंब के उपाय ने साहित्यिक रूपों का उपयोग करके प्रयोगात्मक शोध विधियों का पता लगाया। अपने शोध और जांच का समर्थन करने के लिए हमने अपने छात्रों से डेटा एकत्र करने के लिए प्रश्नावली तैयार की है। विषयों के शिक्षार्थियों की सीमित संख्या के कारण, गुणात्मक सूचना संग्रह विधि के आधार पर प्रश्नावली तैयार की गई है। प्रभावी वितरण के बारे में शिक्षार्थियों की धारणाओं को प्राप्त करने के लिए डाटा का विश्लेषण किया गया है। हालाँकि, हमारे शोध और निष्कर्षों की सटीकता सुनिश्चित करने के लिए हमने अपने शोध निष्कर्षों को अन्य शोधकर्ताओं के समान शोध और केस स्टडी के साथ रेखांकित करके सूचनाओं का त्रिकोणीयकरण विधियों को भी लागू किया है। हमने माना है कि केस स्टडी विधियाँ संग्रह के लिए एक विवादास्पद दृष्टिकोण बनी हुई हैं, हालाँकि, कई सामाजिक विज्ञान अध्ययनों में इसकी वैधता की व्यापक सीमा पर विचार करने के बाद, खासकर जब सामाजिक व्यवहार की गहन व्याख्याएँ होती हैं, तो हमने अपने शोध विधियों के रूप में

केस स्टडी को चुनने का फैसला किया है। इस लेख में हमने लंदन, यूनाइटेड किंगडम में स्थित विश्वविद्यालयों में से एक के केस स्टडी का उपयोग किया है।

केस स्टडी

दृष्टिकोण ने शोधकर्ताओं को अवधारणा पर गहन समझ हासिल करने की अनुमति दी। इस प्रकार, इस कार्य में द्वितीयक स्रोतों का उपयोग करके सूचना एकत्र किया गया और मुख्य रूप से विभिन्न समकक्ष-समीक्षित पत्रिका लेखों और विभिन्न सरकारी और एजेंसी प्रकाशनों का उपयोग किया गया।

शोध परिणाम

वर्तमान शोध के परिणाम से पता चला है कि यह सुनिश्चित करना शिक्षक की जिम्मेदारी है कि शिक्षार्थी की बुनियादी मानवीय क्षमताओं और सांस्कृतिक रूप से आविष्कृत प्रौद्योगिकियों के बीच नियमित बातचीत हो ताकि अंततः उनकी संज्ञानात्मक क्षमताओं में वृद्धि हो। इस सिद्धांत के सिद्धांतों के अनुरूप, छात्रों को आरेख, चार्ट और समाचार पत्रों के रूप में कक्षा में बातचीत, भूमिका निभाने का उपयोग करना चाहिए, जहाँ से विभिन्न व्यावसायिक और वित्तीय मामलों की जानकारी उनके सीखने को चुनौती देती है और उन्हें अधिक रचनात्मक बनने की अनुमति देती है। संसाधनों के संदर्भ में, शोध में पाया गया कि शिक्षकों को सीखने की प्रक्रिया में विभिन्न संसाधनों का उपयोग करने की आवश्यकता है जिसमें कंप्यूटर, किताबें, स्मार्टबोर्ड, उपकरण, कलाकृतियाँ, व्हाइटबोर्ड, विशेष स्पीकर, गेम, कंप्यूटर प्रोग्राम आदि शामिल हो सकते हैं। शोध से यह स्पष्ट था कि पाठ जितना अधिक संवादात्मक होगा, उतना ही अधिक शिक्षार्थी अपने सीखने के अनुभवों को बेहतर बनाने के लिए लगे/प्रेरित होंगे। शोध में यह भी महसूस किया गया कि कुछ शिक्षण विधियाँ कुछ शिक्षार्थियों के लिए बहुत उपयोगी हो सकती हैं, जबकि अन्य के लिए दोषपूर्ण हो सकती हैं।

अनुभवात्मक शिक्षण (क्रॉस-एज पीयर ट्यूटोरिंग, प्रो और कॉन ग्रिड, प्रोडिजी गेम्स, मेमनोनिक) के साथ मिश्रित शिक्षण (ऑनलाइन और ऑफलाइन शिक्षण का मिश्रण) का

उपयोग करने की सिफारिश की जाती है जो केस स्टडी से सीखने के अनुभव को बेहतर बनाने और कक्षा में विघटनकारी मुद्दों को कम करने में बहुत उपयोगी रहे हैं। छात्र सीखने के बारे में पिछले ज्ञान के आधार पर, हमने छात्रों से पूछा कि उन्हें सीखने के सत्र के बारे में सबसे आकर्षक क्या लगा और वे शिक्षण सत्र से क्या परिणाम प्राप्त करना चाहते हैं। इन सवालों के जवाब में, अलग-अलग छात्रों ने अलग-अलग उत्तर दिए, जो दर्शाता है कि अलग-अलग छात्रों ने शिक्षण सत्र में सक्रिय भागीदार होने और महत्वपूर्ण सीखने के परिणाम प्राप्त करने के लिए अलग-अलग सीखने की शैलियों को लागू किया। हमने छात्रों के जवाबों से यह भी अनुमान लगाया कि सीखने का परिणाम भी सीखने वाले के प्रकार पर निर्भर करता है। विशेष रूप से एक कक्षा में, कुछ विशिष्ट प्रकार के शिक्षार्थी होते हैं। उनमें से एक श्रवण सीखने वालों का समूह है जो श्रवण उत्तेजना को प्राप्त करने और व्याख्या करने में अधिक आत्मविश्वास महसूस करते हैं। शिक्षार्थियों की यह श्रेणी कक्षा व्याख्यान, चर्चा सत्र और समूह सत्रों के माध्यम से छात्रों को मिलने वाले निर्देशों से सबसे अधिक लाभान्वित होती है।

(कॉफील्ड, 2013) का मानना है कि विषय या मुद्दे पर ज्ञान में निरंतर उन्नति की कमी के कारण अक्सर शिक्षण और सीखने की गुणवत्ता से समझौता किया जाता है। हम इस भावना से सहमत थे, क्योंकि हमने स्वयं देखा है कि नवाचार और निरंतर सीखना शिक्षण में सफलता सुनिश्चित करने का प्राथमिक तरीका है।

(आर्थर्स, 2007; गिलकजानी, 2012) कक्षा में शिक्षार्थियों की एक अन्य श्रेणी दृश्य शिक्षार्थी हैं जो दृश्य शिक्षण उत्तेजनाओं पर सबसे अच्छी प्रतिक्रिया देते हैं। इन दृश्य उत्तेजनाओं से सीखने के अलावा, दृश्य शिक्षार्थी यह देखकर भी सीखते हैं कि सीखने के सत्र में अन्य लोग क्या करते हैं। शिक्षार्थियों की यह श्रेणी सबसे अच्छा तब सीखती है जब उन्हें चार्ट, आरेख, चित्र या श्यामपट पर लिखे सूत्रों जैसे दृश्य शिक्षण उत्तेजनाएं दी जाती हैं। शिक्षार्थियों की यह श्रेणी आमतौर पर अपने सीखने के परिणामों को लागू करने में रचनात्मक होती है, स्वभाव से चौकस होती है और आसानी से विचलित नहीं होती।

(लियोपोल्ड, 2012) कक्षा में अक्सर पाए जाने वाले शिक्षार्थियों की तीसरी श्रेणी गतिज शिक्षार्थी है। इस श्रेणी के शिक्षार्थी दृश्य या श्रवण सीखने के बजाय व्यावहारिक दृष्टिकोण से सीखने में अधिक सहज होते हैं। इस प्रकार, वे सबसे अच्छा तब सीखते हैं जब शिक्षक उन्हें शारीरिक गतिविधियों के माध्यम से निर्देश देते हैं। अधिकांश मामलों में, वे अपने सीखने के परिणामों को शारीरिक गतिविधियों के माध्यम से भी प्रस्तुत करते हैं। फिर भी, प्रश्नों के प्रति उनके उत्तरों से हमें यह भी समझ में आया कि छात्रों के सीखने के उद्देश्यों और अपेक्षित सीखने के परिणामों के पीछे कुछ आंतरिक और बाहरी कारक भी हैं। इस रणनीति का उपयोग करके हमें जो सकारात्मक अनुभव हुआ है, साथ ही हमारे सहकर्मियों की समान राय के कारण, हम अनुशंसा करते हैं कि पाठ में व्यावहारिक गतिविधियों को शामिल करना हर पाठ्यक्रम और पाठ्यक्रम का एक अभिन्न अंग हो सकता है। चूंकि हम विश्वविद्यालयों और कॉलेजों में छात्रों को अलग-अलग मॉड्यूल पढ़ाते रहे हैं, इसलिए काफी हद तक हमें छात्रों की सीखने की शैली के आधार पर विभिन्न शिक्षण दृष्टिकोणों का उपयोग करना चाहिए।

नील फ्लेमिंग (2001) द्वारा विकसित प्रश्नावली – दृश्य, श्रवण, पठन/लेखन, और गतिज) के उपयोग से शिक्षार्थियों के एक बड़े समूह के लिए, हम समझ गए कि शिक्षार्थियों की तीन पसंदीदा शैली का मिश्रण है। हमने शुरू में कक्षा में समूह चर्चा के बाद पावरपॉइंट स्लाइड के उपयोग से पढ़ाना शुरू किया। श्रवण शिक्षार्थियों को इस शिक्षण रणनीति से मदद मिली है क्योंकि वे हमारे व्याख्यान को सुनकर और अपने साथियों के साथ इस मामले पर चर्चा करके प्रासंगिक लागत की अवधारणा को समझने में सक्षम हुए हैं। हमने अवधारणा को सुदृढ़ करने और प्रासंगिक लागत दृष्टिकोण के विभिन्न उपयोग को उजागर करने के लिए वीडियो क्लिप के साथ-साथ व्याख्यान का उपयोग किया, जिसने अंततः दृश्य शिक्षार्थियों की मदद की। हमने शिक्षार्थियों के लिए कुछ केस स्टडी परिदृश्यों के साथ पावरपॉइंट स्लाइड भी प्रिंट कीं अर्थात्, सीखने की शैलियों के आधार पर, हम शिक्षण और सीखने की रणनीतियों और दृष्टिकोणों की विविधता को शामिल करने का प्रयास करते हैं, जबकि मुख्य उद्देश्य शिक्षार्थियों के लिए समान अवसर सुनिश्चित करना है ताकि वे विषय

संदर्भों को समझ सकें और पाठ के दौरान सक्रिय रूप से भाग ले सकें। सबसे महत्वपूर्ण बात, हमने विभिन्न सीखने की शैलियों के छात्रों के लिए आकर्षक और रचनात्मक सीखने के माहौल को बढ़ावा देने की कोशिश की। इससे न केवल मेरी कक्षा में छात्रों की भागीदारी की दर को बढ़ावा मिला, बल्कि यह भी पाया कि उनमें से कई ने विचारों के साथ आए, जिसने मुझे प्रबंधन पाठ्यक्रम के लिए नए दृष्टिकोण सीखने के लिए प्रेरित किया, जैसे कि राजनीतिक घटनाओं से प्रभावित सांस्कृतिक गतिविधियाँ। छात्र के सीखने के प्रदर्शन को प्रभावित करने वाले प्रमुख आंतरिक कारकों में आयु, लिंग, आनुवंशिकता, संज्ञानात्मक बुद्धि और व्यक्तिगत सीखने की सुविधाएँ शामिल हैं। छात्रों के सीखने के प्रदर्शन को प्रभावित करने वाले बाहरी कारकों में शिक्षक द्वारा दिए गए निर्देश का तरीका और विधि, शिक्षक की योग्यता, छात्रों पर साथियों का प्रभाव और एक सीखने के सत्र में शिक्षक-छात्र अनुपात शामिल हैं।

(सिंह, मलिक, और सिंह, 2016; पेटी, 2009) व्यवहारवादी दृष्टिकोण जिसे प्रख्यात अमेरिकी मनोवैज्ञानिक जे.बी. वॉटसन ने 1913 में पेश किया था, सिद्धांतों में से एक है। इस सिद्धांत का मुख्य ध्यान अनुकरण के माध्यम से अनुकूलन की अवधारणा पर है।

(वॉटसन और रेनर, 1920) हमने पाया है कि यह दृष्टिकोण कई उदाहरणों में कक्षा में विशेष रूप से उपयोगी है। कक्षा में बातचीत के दौरान हम नियमित रूप से याद करते हैं कि लोग अनुभव और वस्तुओं के माध्यम से विशिष्ट ध्वनियों और शब्दों को जोड़ते हैं। हम यह भी जानते हैं कि लोग कुछ भावनाओं और भावनाओं को कुछ स्थितियों, प्रतीकों और वस्तुओं के साथ जोड़ते हैं जो उन्हें अपने दैनिक जीवन में मिलती हैं।

अडायर (2009) जीवन में इस सिद्धांत को ध्यान में रखते हुए, हमने बार-बार ऐसा माहौल बनाने का प्रयास किया है और यह तभी संभव है जब हम छात्रों को शारीरिक रूप से प्रदर्शित करें कि समस्याओं को कैसे हल किया जाए या कुछ समस्याग्रस्त स्थितियों का सामना कैसे किया जाए।

हर्जबर्ग ने 1957 में प्रस्ताव रखा अगला सिद्धांत जो कक्षा शिक्षण-अधिगम के साथ जुड़ा हो सकता है, वह है द्वि कारक सिद्धांत जिसे प्रेरणा-स्वच्छता सिद्धांत या दोहरे कारक सिद्धांत के रूप में भी जाना जाता है। जिन्होंने एक साथ कुछ सीखने के प्रेरकों की ओर संकेत किया, जैसे काम की चुनौतीपूर्ण प्रकृति, कर्मचारी के प्रदर्शन की मान्यता और काम से नए अवसरों की संभावना, रोमांचक काम और कर्मचारी की भागीदारी निर्णय लेने की प्रक्रिया। यह सिद्धांत काफी हद तक कक्षा व्यवहार के प्रबंधन में बहुत उपयोगी है।

इस सिद्धांत को प्रख्यात संज्ञानात्मक मनोवैज्ञानिक जेरोम बर्नर ने 1957 में प्रस्तावित किया था और कहा था कि शिक्षा का मूल उद्देश्य शिक्षार्थियों में बौद्धिक विकास को बढ़ावा देना होना चाहिए।

ब्रूनर (1957, पृष्ठ 234) के अनुसार, "सामान्य कोडिंग प्रणालियाँ जो किसी को डेटा से परे जाकर नई और संभवतः उपयोगी भविष्यवाणियाँ करने की अनुमति देती हैं"। सिद्धांत ने यह भी प्रस्तावित किया कि जब शिक्षार्थी में संज्ञानात्मक विकास को प्रोत्साहित किया जाता है, तो यह बौद्धिक रूप से सोचने की उसकी क्षमता के रूप में प्रकट होता है।

निष्कर्ष

व्यक्तिगत प्रतिबिंब और कक्षा अवलोकन से यह पता चलता है कि व्यक्तियों या समूहों के व्यवहार के प्रबंधन के लिए विभिन्न रणनीतियों का उपयोग करना पड़ सकता है जैसे प्रश्न पूछना, भूमिका निभाना, पुरस्कार, दंड, चर्चा, जोड़ा/समूह कार्य, अवलोकन, स्विचिंग गतिविधियाँ, ऑडियो/विजुअल आदि। शिक्षकों की गतिशीलता को शिक्षकों द्वारा समझने की आवश्यकता है, इस संबंध में, शिक्षकों को शिक्षार्थियों की आवश्यकता और प्राथमिकताओं को समझने और कुछ व्यक्तियों के बजाय सभी शिक्षार्थियों के सीखने के उद्देश्य को पूरा करने के लिए तदनुसार पाठ योजना तैयार करने की आवश्यकता है। सबसे महत्वपूर्ण बात यह है कि शिक्षकों को जितनी जल्दी हो सके सीखने की बाधाओं की पहचान करने की आवश्यकता है। उदाहरण के लिए, कभी-कभी छात्र विघटनकारी होते हैं क्योंकि उनके पास भाषा अवरोध, कम आत्मसम्मान, आत्मविश्वास, अनुपयुक्त होने की भावना

आदि सहित कुछ बाधाएं होती हैं। इस मामले में, उन्हें चेतावनी देने के बजाय, शिक्षकों के लिए अंतर्निहित कारणों को जानना और तदनुसार प्रतिक्रिया देना बेहतर है। सकारात्मक प्रतिक्रिया, कभी-कभी, छात्रों के आत्मविश्वास और आत्मसम्मान पर गहरा सकारात्मक प्रभाव डालने की भूमिका निभाती है। शिक्षकों के लिए सक्रिय शिक्षण के माध्यम से छात्र जुड़ाव को बढ़ाना, सीखने की प्रक्रिया (अनुभवात्मक और मिश्रित शिक्षा) के माध्यम से छात्र समावेशिता को बढ़ावा देना और आकलन के माध्यम से संकाय और छात्र अपेक्षाओं के साथ परिणाम का मिलान करना आवश्यक है। शिक्षकों के लिए ऐसा करना आसानी से संभव हो सकता है, अगर वे प्रभावी ढंग से संवाद करने में सक्षम हों, नियंत्रण में रहें, नियमों के अनुरूप रहें, विकल्प प्रदान करें और खुद को समायोजित करें और अंततः व्यवहार के प्रबंधन में रचनात्मक हों।

संदर्भ

- एडेयर, जे. (2009)। नेतृत्व और प्रेरणा: पचास नियम और दूसरों को प्रेरित करने के आठ प्रमुख सिद्धांत, लंदन: कोगन पेज।
- अलफयाद, जेड., आरिफ, एल.एस. (2017)। कर्मचारी की आवाज़ और नौकरी की संतुष्टि: हर्ज़बर्ग दो-कारक सिद्धांत का एक अनुप्रयोग। प्रबंधन और विपणन की अंतर्राष्ट्रीय समीक्षा 7, 150-156।
- अल्फ्रीरी, एल., ब्रूक्स, पी. जे., एल्लिच, जे., टेनेनबाम, एच. (2011)। क्या खोज-आधारित निर्देश सीखने को बढ़ाता है? जर्नल ऑफ़ एजुकेशनल साइकोलॉजी 103.
- आर्थर्स (2007)। कक्षा में एक करतब: विभिन्न शिक्षण शैलियों का प्रबंधन। नर्सिंग में शिक्षण और सीखना
- बेकर, ए., डेविस, एस., मैकग्रेगर, एल., ग्रोवर, सी. (1990)। पाठ्यक्रम और प्रशिक्षक से छात्र की अपेक्षाएँ। शिक्षण मनोविज्ञान 17, 59-62।
- ब्रूनर, जे. एस. (1957)। दी गई जानकारी से परे जाना। न्यूयॉर्क: नॉर्टन।
- एलिस, एस. और टॉड, जे. (2015)। कक्षा में सीखने के लिए व्यवहार को बढ़ावा देना: प्रभावी रणनीतियाँ, व्यक्तिगत शैली और व्यावसायिकता। रूटलेज: लंदन।
- ग्रे, सी., और मैकब्लेन एस. (2012)। दृश्य, श्रवण, गतिज सीखने की शैलियाँ और अंग्रेजी भाषा शिक्षण पर उनका प्रभाव। जर्नल ऑफ़ स्टडीज इन एजुकेशन 2, 104-113।

- हैकमैन, जे.आर. ओल्डम, जी.आर., (1976)। कार्य के डिजाइन के माध्यम से प्रेरणा: एक सिद्धांत का परीक्षण। संगठनात्मक व्यवहार और मानव प्रदर्शन 16, 250-276।
- जॉनसन, एच. (2012)। सर्पिल पाठ्यक्रम। एजुकेशन पार्टनरशिप इंक., फ्लोरिडा।
- कील, जे., (1999)। आज के शैक्षिक और प्रबंधकीय दर्शन को प्रतिबिंबित करने के लिए मास्त्रो की आवश्यकताओं के पदानुक्रम को फिर से आकार देना। जर्नल ऑफ इंस्ट्रक्शनल साइकोलॉजी 26, 167।
- लियोपोल्ड, एल. (2012)। श्रवण, दृश्य और गतिज शिक्षार्थियों के लिए पूर्व-लेखन कार्य। जैस् कनाडा जर्नल 29।
- मैकलियोड, एस. (2008)। ब्रूनर के प्रतिनिधित्व के तीन तरीके। सिंपल साइकोलॉजी।
- माइकल, जे. ए. और मोडेल, एच. आई. (2003)। कॉलेज और विज्ञान कक्षाओं में सक्रिय शिक्षण: शिक्षार्थी को सीखने में मदद करने वाला एक कार्यशील मॉडल। लॉरेंस एर्लबम एसोसिएट्स पब्लिशर्स: लंदन।
- मित्रा, डी. (2008)। छात्र की आवाज को बढ़ाना। शैक्षिक नेतृत्व 66। मोयेरी, एच. (2015)। 'स्नातक छात्रों की सीखने की प्राथमिकताओं (टिज़ मॉडल) का उनकी भाषा उपलब्धि पर प्रभाव', जर्नल ऑफ लैंग्वेज टीचिंग एंड रिसर्च, 6, 1, पृष्ठ 132-139, एजुकेशन रिसर्च कम्प्लीट, म्टैब्वेज।
- ओलेज़, पी. (2018)। जॉन बी. वॉटसन और व्यवहारवाद।
- पेटी, जी. (2009)। आज पढ़ाना: एक व्यावहारिक मार्गदर्शिका. चौथा संस्करण. नेल्सन थॉर्न्स लिमिटेड: चेल्सेनहैम।
- पॉन्ड, के., रेहान, यू. (1997)। सहकर्मी समीक्षा का उपयोग करके छात्रों का आकलन करना सीखना. शैक्षिक मूल्यांकन में अध्ययन 24, 331-348।
- रोजर्स, बी. (1995)। कक्षा व्यवहार: प्रभावी शिक्षण, व्यवहार प्रबंधन और सहकर्मी समर्थन के लिए एक व्यावहारिक मार्गदर्शिका. चौथा संस्करण. सेज: लंदन।